

THE OXFORD COLLEGE OF SCIENCE

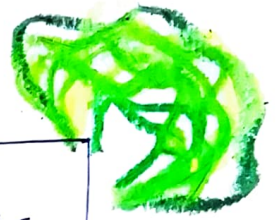
हिन्दी :-

वैश्विक तापमान

Submitted To,
Dr. Suresh Rathod
Associate Professor
Department of
Language

Submitted by,
Iharounya.M
Bsc CZBT
Reg no:- 19RNS85053

सूची :-



विषय :-	Pg no :-
1> पूर्वपीठिका	01-02
2> कारण	03-05
3> दुष्प्रभाव, नियन्त्रण	06-08
4> लाभ या अदुपयोग	09
5> निष्कर्ष	10

वैश्विक तापमान :-

धरती के ताप का बढ़ना पूरी
 दुनिया के लिये चिंताजनक एवं
 चिंतनीय विषय है। वैज्ञानिकों एवं
 समाजशास्त्रियों ने अपने नवीनतम अध्ययनों में
 पाया है कि जलवायु परिवर्तन के ताप बढ़ने के
 उत्सर्जन पर प्रभावी रोक नहीं लगा जाने
 के कारण ग्लोबल वार्मिंग की विध्वंसकारी
 समस्या और गंभीर होने लगी है और
 इससे कई बीमारियों तथा अन्य पर्यावरणीय
 संकट वैश्विक स्तर के कारण शीघ्र शताब्दी
 में लू चलने, विनाशकारी मौसम और
 उष्णकटिबंधीय बीमारियों में बढ़ोतरी के

के कारण अनेक लोग मृत्यु की चपेट
 में आये। समुद्री सतह में वृद्धि हो रही
 है; बाद व शुष्क की आशंका बढ़ रही है।
 खाद्यान्न में गिरावट आ रही है, खाद्यान्न में
 गिरावट आ रही है; तथा प्रति 10 वर्ष दुई
 में लगभग 2.43 डिग्री सेल्सियस की
 वृद्धि वसुधा के अस्तित्व को लीलने
 का कारण बनी हुई है। पृथ्वी के सतह पर
 औसत तापमान कहलाता है। ग्लोबल
 वार्मिंग कहलाता है। ग्लोबल वार्मिंग कहलाता है।
 ग्लोबल वार्मिंग मुख्य रूप से मानव
 रूप से मानव प्रेरक कारकों के कारण
 होता है। औद्योगीकरण में ग्री हाउस
 गैसों का अनियंत्रित उत्सर्जन तथा
 जीवाश्म ईंधन का जलना ग्लोबल वार्मिंग
 का मुख्य कारण है।

कारण :-

जहाँ विश्व में एक और उच्च तकनीकी औद्योगिक गतिविधियाँ बढ़ रही हैं जो मनुष्य के विकास की सूचक हैं वहीं दूसरी तरफ ग्लोबल वार्मिंग की गमहट भी बढ़ रही है। जो भारी मानवता के लिये घातक सिद्ध हो सकती है। विश्व भर के पर्यावरणविद लम्बे समय से चिंतित हैं कि कार्बन डाई ऑक्साइड तथा फ्लोरो कार्बन समूह की गैसों ने निरंतर उत्सर्जन से, ग्रीन हाउस प्रभाव के चलते दिनों-दिन धरती का तापमान बढ़ता जा रहा है। पृथ्वी के वायुमंडल में अनगिनत गैसों के घनत्व प्रक्रियात्मक रूप से बढ़ते रहते हैं। इन गैसों में कार्बन डाई ऑक्साइड

ओजोन , नाइट्रस ऑक्साइड मीथेन आदि होते हैं। सूर्य की किरणों , ओजोन मंडल में बिछी ओजोन पट्टिका से छनकर पशुबैंगनी को इस प्रकार आवश्यक उत्पन्ना का पलायन भी इसी प्राकृतिक कार्य का महत्वपूर्ण भाग है। कारण गर्मी बाहर नहीं जा पाती है और इस प्रकार विश्वव्यापी तापमान में वृद्धि होती है। ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण प्रदूषण है। आज के समय के अनुसार प्रदूषण और उसके प्रकार बताना व्यर्थ है। हर जगह और क्षेत्र में यह बढ़ रहा है , जिसे कार्बन डाई आक्साइड की मात्रा बढ़ रही है। जिसके चलते वैश्विक ताप बढ़ रहा है।

ग्लोबल वार्मिंग का सबसे बड़ा कारण
प्रदूषण है। आज के समय के अनुसार,
प्रदूषण और उसके प्रकार बताना व्यर्थ
है। हर जगह और क्षेत्र में यह बढ़
रहा है, जिससे कार्बन डाइऑक्साइड की
मात्रा बढ़ रही है। जिसके चलते
वास्तविक ताप बढ़ रहा है। आधुनिकीकरण
के कारण, पेड़ों की कटाई गांवों का
शहरीकरण में बदलाव। हर खाली जगह
पर बिल्डिंग, कारखाना, या अन्य कोई
कमाई के स्रोत खोले जा रहे हैं।
खुली और गंजी हवा या ऑक्सीजन
के लिये कोई स्रोत नहीं छोड़े।

दुष्प्रभाव :-

पृथ्वी पर बढ़ते तापमान से अतिवृष्टि के अलावा समुद्र की जल शक्ति बढ़ने लगी है। वर्ष का पिघलना और समुद्र के जलस्तर का ऊपर आना पृथ्वी के जलमग्न हो जाने की संभावना को बढ़ाता है।

पिछले सौ वर्षों से पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। अगर ऐसा ही चलता रहा तो सन 2100 तक समुद्र का जलस्तर एक मीटर तक वृद्धि कर सकता है। वैज्ञानिकों का यह भी निष्कर्ष है कि वायुमंडल में तापमान वृद्धि के कारण पृथ्वी की अपनी धुरी पर घूमने की रफ्तार भी कम होती जा रही है।

नियन्त्रण :-

सन् 1959 में अमेरिका के वैज्ञानिक
लास से ने कार्बन डाईऑक्साइड व
क्लोरो फ्लोरो कार्बन गैसों के पर्यावरण
पर पड़ते असर को रेखांकित किया।
लेकिन ठोस आँकड़ों का अभाव बताकर
विकसित देशों ने स्थिति की गंभीरता
स्वीकारना उचित नहीं समझा। यह समस्या
सन् 1974 में कार्बनडाई ऑक्साइड व
तापमान वृद्धि के संबंधों को दर्शाते
द्वारा कम्प्यूटर मॉडलों व तत्सम्बन्धी
अनुसंधानों के माध्यम से सुलझा ली
गई और तब कहीं जाकर विकसित देश
कुछ सचेत हुए और उसके पाँच वर्ष बाद

सम्मेलन में समस्या की गंभीरता समझी
इसके बाद वर्ष 1980 में ऑस्ट्रिया में
आयोजित संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम
विश्व मौसम विज्ञान संगठन की बैठक
जलवायु परिवर्तन के एक अन्तरराष्ट्रीय
समस्या के रूप में स्वीकृति प्रदान की गयी
हालाँकि तब तक बहुत देर हो चुकी थी
और धरती की ओजोन परत में क्षरण
होना शुरू हो चुका था। सन 1985 में
वियना कन्वेंशन, 1987 में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल
1988 में टोरंटो सम्मेलन। इसके उल्लंघन
दण्ड का प्रावधान भी रखा गया लेकिन
वस्तुस्थिति यह है कि अभी तक केवल
83 देशों ने इस समझौते पर इस्ताफना
दिए हैं में से केवल 14

ग्लास :-

कार्बन डाय ऑक्साइड कि ज्यादा मात्रा से यह जाना गया है कि पौधे और अच्छी तरह से उगाते हैं। और प्रारूप का भी आगमन कम रहता है। ठण्ड के मौसम में पौधों को उगाने के लिए अक्सर ग्रीन हाउस का प्रयोग किया जाता है। यह हाउस एक ग्लास से घिरा होता है। ग्लास का यह पैनल सूर्य के किरणों को अन्दर आने तो देता है मगर अन्दर जो ताप उत्पन्न होता है उसे बाहर जाने नहीं देता। इससे यह ग्रीन हाउस अन्दर से ठीक उसी तरह गर्म हो जाता है जैसे बहुत देर तक धूप में खड़ी गाड़ी अन्दर से गर्म हो जाती है।

निष्कर्ष :-

वस्तुतः ग्लोबल वार्मिंग प्राक और बढ़ती औद्योगिक तकनीक और आधिकारिक व्यापार बढ़ाने के लिये अधिकाधिक उत्पादन करने प्रावं विश्व संगठनों के अत्यधिक दोहन का प्रश्न है । वही दूसरी ओर न केवल मानवता को बल्कि पूरी वसुधा को समुद्र में डूबने से बचाने और इस तरह समस्त अस्तित्व को बचाये रखने की चुनौती है । इसके लिये हमें औद्योगिक तकनीक , उत्पादन प्रक्रिया और व्यापारिक वृत्ति पर इस तरह से पुनर्विचार करना होगा कि आज का मनुष्य अपने तकनीकी वैभव को भी बढ़ा सके और जीवित भी रह सके ।